श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख ● पूर्ण अंक २११ अंक ● फरवरी-२०२५

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१. Publisher: Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad- 380001 Rs.5/-

गोधावी (अहमदाबाद) बहनो के मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा की विधि करते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

भावनगरपुरा (कलोल) मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा की विधि करते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

महिसा मंदिर के पाँचवे पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी की आरती उतारते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

सूर्यनगर (मूली) मंदिर में हनुमानजी की मूर्ति प्रतिष्ठा की आरती उतारते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

जमीयतपुरा मंदिर के २२ वे पाटोत्सव के अवसर पर प्रभाहनुमानजी की आरती उतारते और शाकोत्सव करते प.पू. महाराजश्री ।

डांगरवा मंदिर में सभा में आशीर्वाद देते प.पू. महाराजश्री ।

रायसण (गांधीनगर) मंदिर भूमि पूजन अवसर पर शाकोत्सव करते तथा सभा में आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

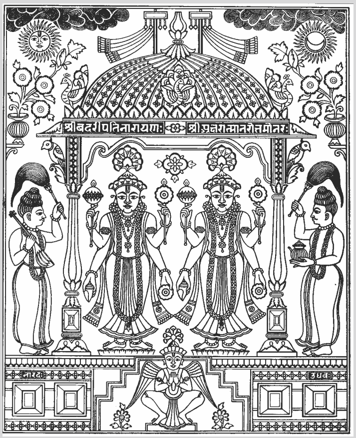

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७, २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी
(महंत स्वामी)
मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ९३१३७०६०९५
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail :
magazine@swaminarayan.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० • प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १८ • अंक : २११ • फरवरी-२०२५

अ नु क्र म णि का

०१. अस्मदीयम् ०४

०२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री,
प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा ०५

०३. शयन अवस्था में प्रभु सभी स्वामी के श्याम ०६

०४. श्रीहरि के चरणकमल से पवित्र कांकरिया के कण-कण
में श्रीहरि विराजे है । ०७

०५. श्रीहरि के सातवे और आठवे वंशज के मुख से आर्शीवचन ०८

०६. अपने हरि मंदिर तथा प्रसादी के स्थल(सादरा-वासणा देश)१२

०७. श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से १३

०८. भक्ति सुधा १४

०९. सत्संग समाचार १७

अस्मदीयम्

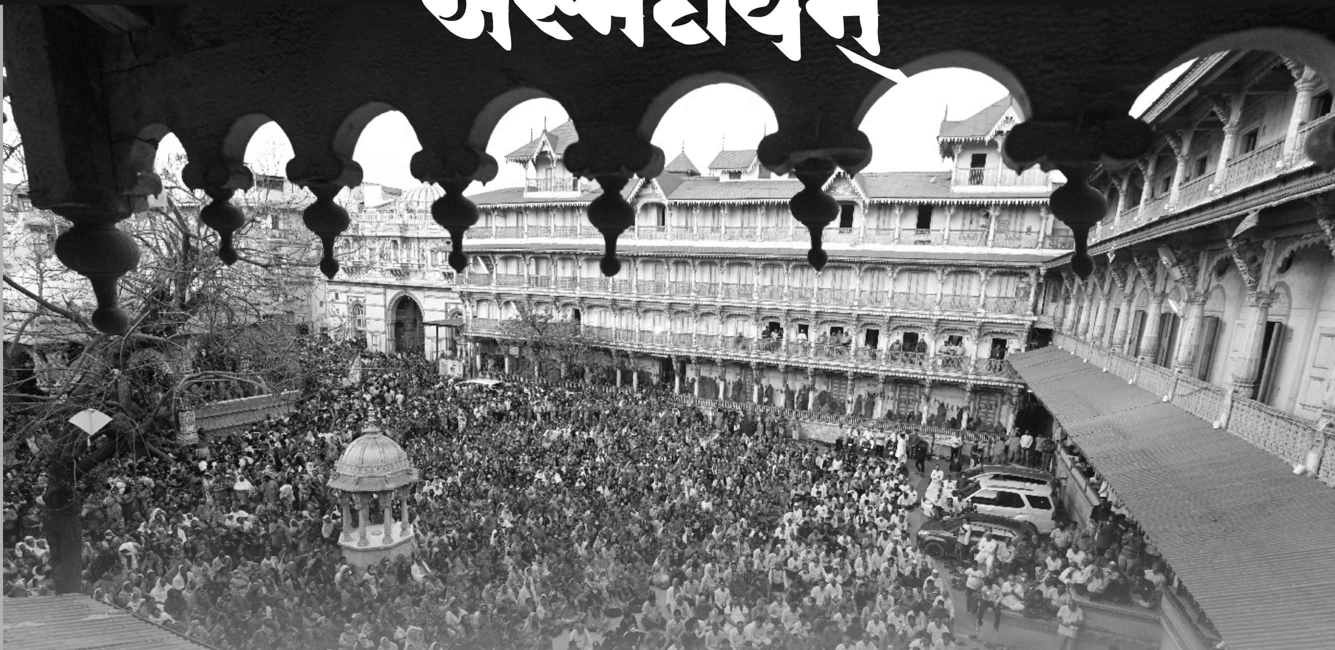

प्रिय भक्तगण

धनुर्मास में पवित्र सभा मंडप में अधिक उत्साह से पूरे महीने तक धुन किये । श्रीजी महाराज जिस उद्देश्य से इस मंदिर का निर्माण किये है । यह सार्थक ही है । विशेष करके बच्चे और युवक प्रातः आ करके धुन का गायन करते थे । यह कृत्य देखकर पूज्य महाराजश्री, पूज्य लालजी महाराजश्री अत्यन्त खुश हुए । पू. महाराजश्री हमेशा अपने बच्चे-बच्चियो में सत्संग का विकास हो इस बात को कहते थे ।

हम सभी अपने मंदिर में दिव्य शाकोत्सव को मनाकर धन्यता का अनुभव करते है । अहमदाबाद मंदिर में श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में धनुर्मास के मध्य अलौकिक शाकोत्सव और उत्तरायण के दिन सभी दर्शनार्थियो ने उंधीयु, जलेबी का प्रसाद खाये थे । अब तो याद है न ! श्री स्वामिनारायण भगवानने शिक्षापत्री संवत १८२२ में २०० वर्ष पूर्ण करेगा । हम सभी प्रत्येक वर्ष मूली में वसंत पंचमी का समैया करते है । अब पूज्य लालजी महाराजश्री ने घोषणा की है कि शिक्षापत्री के इस २०० वे वर्ष में अपने सत्संग में ता. २३-१-२०२६ से ता. २७-१-२०२६ तक भव्य ''समैया'' मनाया जायेगा । विशेष करके हमे यह सोचना है कि हम सभी श्रीजी महाराज के आज्ञा का पूरा पालन कर रहे है कि नही ''शिक्षापत्री'' अपना मूल्यवान आभूषण है । जीवन कैसे व्यतीत करें । मानव जीवन का उद्देश्य और उपासना को तत्वज्ञान महाराजने हम सभी को लिखकर दिये है ।

इस संसार में जन्म लेने का उद्देश्य क्या है ? महाराज के सभी सत्संगियो को प्रतिदिन सावधान होकर शिक्षापत्री के अनुसार कार्य करना चाहिए । अपने ईच्छानुसार करने को नही कहा गया है ।

मनुष्य जन्म की सार्थक, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष यह शिक्षापत्री के आज्ञा पालन से ही सम्भव है ।

तो हम सभी मिलकर शिक्षापत्री द्विशताब्दी वर्ष को ऐसा मनाये कि अपना जीवन धन्य हो जाये ।

आप सभी भक्तगणो को मेरा जय श्री स्वामिनारयण

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कार्यक्रम की रुपरेखा

(जनवरी-२०२५)

३-४ श्री स्वामिनारायण मंदिर भारापर (कच्छ) मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना ।

९ डांगरवा गाँव में कथा पारायण के अवसर पर पधारना ।

१० चांदखेडा श्री स्वामिनारायण मंदिर कथा के अवसर पर पधारना । श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर एकादशी के अवसर पर पधारना ।

१२ कालुपुर मंदिर पर धुन में विराजकर सभा में शाकोत्सव का वघार किये । और वहाँ से श्री प्रभा हनुमानजी मंदिर जमीयतपुरा पाटोत्सव के अवसर और रायसन (गांधीनगर) पारायण के अवसर पर पधारना ।

१३ श्री स्वामिनारायण मंदिर गोधावी (बहनोका) मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना ।

१४ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर धनुर्मास धुन की पूर्णाहुति के अवसर पर पधारना ।

२५ संत महादीक्षा अपने करकमलो द्वारा पूर्ण किये । कालुपुर मंदिर ।

२८ सूर्यनगर गाँव में (मूली प्रदेश) श्री हनुमान महाराजजी के मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना ।

२९ श्री स्वामिनारायण मंदिर महिसा (ता. कपडवंज) पाँचवे पाटोत्सव के अवसर पर पधारना ।

३० भावनगरपुरा (ता. कलोल) नूतन मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना ।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम

(जनवरी-२०२५)

३ महिज (जेतलपुर प्रदेश) गाँव में पधारना ।

५ टोरडा श्री स्वामिनारायण मंदिर साबरकांठा युवक मंडल स्नेह मिलन, नारणपुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर मंदिर शाकोत्सव, शीलज में नवनिर्मित मंदिर भूमि पूजन - शाकोत्सव और पारायण के अवसर पर पधारना ।

८ चाँदखेडा में कथा के अवसर पर पधारना ।

१० एकादशी को श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में पधारना ।

१२ महेसाणा मंदिर युवक स्नेह मिलन के अवसर पर पधारना ।

१३ श्री स्वामिनारायण मंदिर बीजापुर के पाटोत्सव के अवसर पर पधारना ।

१४ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर धनुर्मास धुन की पूर्णाहुति के अवसर पर पधारना ।

२४ घमीज गाँव में शाकोत्सव के अवसर पर पधारना ।

२८ भावनगरपुरा (ता. कलोल) नूतन मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना ।

श्री स्वामिनारायण

शयन अवस्था में प्रभु सभी स्वामी के श्याम

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण भगवानने आंत्यिक कल्याण के नींव को रखने के लिये । और सर्वोपरि उपासना को अखंड रखने के लिये भव्य मंदिर बनाने का निर्णय किये । अपने इस संकल्प के अनुसार स्वामिनारायण भगवानने अहमदाबाद में सर्व प्रथम आनंदानंद स्वामी के करकमलो द्वारा भव्य शिखर मंदिर का निर्माण करवाये थे ।

इस मंदिर की प्रतिष्ठा संवत १८७८ फाल्गुन सुद त्रीज ता. २४-०२-१८२२ रविवार के दिन अति भव्यता पूर्वक स्वामिनारायण भगवानने किया था । मंदिर के मध्य खंड में भरतखंड के राजा श्री नरनारायणदेव की प्रतिष्ठा किये थे । मोक्ष का सदाव्रत खोले । अनेक दर्शनार्थी दर्शन किये । सभी तरफ जयजयकार हुई ।

उसी दिन शायंकाल स्वामिनारायण भगवानने मुक्तानंद स्वामी को, गोपालानंद स्वामी, इत्यादि बड़े संतो को बुलाये थे । और बोले किं हम लोग तो मंदिर तैयार कर दिये है। इस मंदिर की सेवा वैष्णव परम्परा के अनुसार करना है । वैष्णव परम्परा में वल्लभाचार्यजी महाराज के पुत्र विठ्ठलनाथजी की सेवा विधि भक्ति भावना अच्छी है । और हमें भी प्रिय है । हम भी उसी अनुसार जगाना और शयन अपनाना है । इस लिये प्रभातिया तथा लोरी के पद हमें बनाना चाहिए । इससे सभी में भक्ति की भावना आयेगी । उसे कैसे करेगे ? संतो आप का क्या अभिप्राय है । सभी बडे संतोने स्वामिनारायण भगवान की इस बात का समर्थन दिये है । वैष्णव परम्परा के अनुसार अपने मंदिरो में सेवा की जाये ।

बाद में श्रीहरिने मुक्तानंद स्वामी से बोले कि आज ही रात में भगवान को शयन करवाना है । इस लिये आज आज एक प्रार्थना युक्त लोरी के पद की रचना करे । श्रीहरि के आज्ञानुसार सत्संग में ही मुक्तानंद स्वामीने संवत १८७८ फाल्गुन सुद तीज के दिन संध्या के समय विहार राग में, ''पोढे प्रभु सकल मुनि के श्याम'' इस नये शयनगीत (लोरी) की रचना करके रात्रि में जब देव को शयन समय आपाले, तब मुक्तानंद स्वामीने अच्छे राग से महाराज के सामने मंदिर में गाये थे ।

इससे स्वामिनारायण भगवान और सभी संत-भक्त अधिक खुश हुए ।

बाद में सभा को सम्बोधित करते हुए । स्वामिनारायण भगवान बोले हमारे अन्तर का जो भाव हुआ । उसी प्रकार का मुक्तानंद स्वामीने पद की रचना किये है । सभी संतो के विश्राम और अक्षर से परे पुरुषोत्तम नारायण अवनी के उपर आये । और धरती उपर अक्षरधाम का आनंद फैलाये । हमारे चरणो के रज के कारण कई लोग महानिष्कामी बने है । ऐसी महिमा इस पद में है । इस लिये इस भाव को हृदय में रखकर लोरी बोलना चाहिए । इससे हम अधिक खुश होते है ।

इस प्रकार पोढे प्रभु सकल मुनि के श्याम, स्वामिनारायण दिव्य मूर्ति, संतन के विश्राम ।

इस लोरी का पद श्रीजी महाराज के समय से गाया जाने वाला अति प्रसाद वाला है । श्रीहरि के आज्ञानुसार आज भी सम्प्रदाय के प्रत्येक मंदिर में बच्चे से लेकर वृद्ध तक, शिक्षित और अशिक्षित सभी भक्तजन प्रतिदिन यह रात्रि के पद गाते है । मंदिर की तरह अपने अन्तर आत्मा में प्रभु को पधराकर दिव्य अनुभव करते है । हम सभी को इस पद में प्रार्थना वाले भाव को हृदय में रखकर, मूर्ति के लिये विराम दे । प्रत्येक हरिभक्त की घर-घर मूर्ति के सम्मुख बोलकर शयन के समय लोरी गीत गाना चाहिए । और मानसिक पूजा में इस गान का उपयोग करना चाहिए । यह लोरी गीत गाने वाले के हृदय में साक्षार भगवान शयन करते है । इसके बाद श्रीहरि के समकालीन जो नये मंदिरो में नित्य नियम से संतो के मंडल द्वारा गाया जाता है । आज भी पूरे सत्संग में यह शयन गीत (लोरी) गायी जाती है।

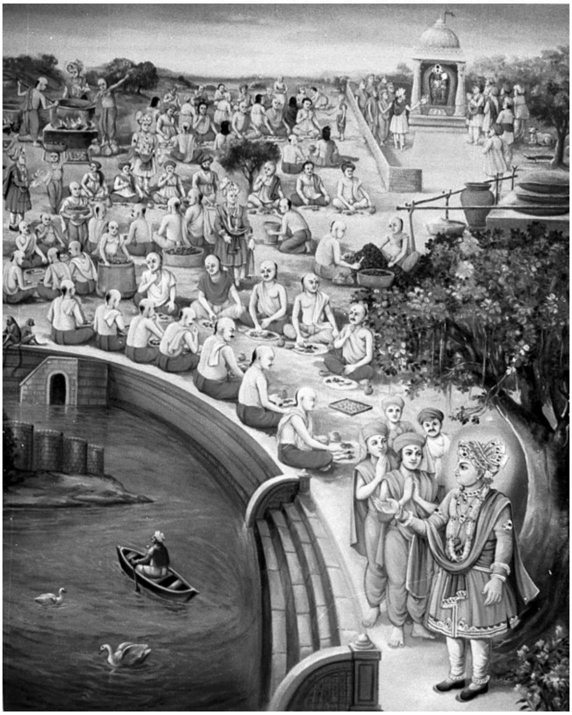

श्री स्वामिनारायण

श्रीहरि के चरणकमल से पवित्र कांकरिया के कण-कण में श्रीहरि विराजे है।

– स.गु. शास्त्री स्वामी नारायणवल्लभदासजी (वडनगर महंतश्री)

आराध्यदेव भगवान श्री स्वामिनारायणने विश्व को सर्व प्रथम मंदिर अहमदाबाद के मध्य निर्माण कराके आज से दो सौ वर्ष पहले अपने अधिकार में लेकर श्री नरनारायणदेव वि. सं. १८७८ के फाल्गुन सुद-३ के दिन प्रतिष्ठित करके मुमुक्षु जीव आत्माओ के लिये मोक्ष का सदाव्रत खुला रखे। तथा ब्राह्मणो को भोजन करवाये। शुद्ध संकल्प के साथ फाल्गुन सुद-५ (पंचमी) के पवित्र दिन पर ब्रह्मचौरासी करके तीनो लोक में जय जयकार करवाये थे।

श्री स्वामिनारायण सम्प्रदाय के संत शास्त्रो में इस ब्रह्मचौरासी का अद्‌भुत वर्णन किया गया है। इस समय में अलौकिक ब्रह्मचौरासी करना ''अनोखी और पहली भव्यता और उदारता'' मानी जाती है। आज इस कांकरिया सरोवर के आस-पास विहार करने से हृदय स्पर्शी शांति का अनुभव आनंदित करना है। इस लिये लिखने का मन कर रहा है। अनुभव होता है कि श्रीहरि के चरण कमल से पवित्र कांकरिया की धरती में आज भी भगवान श्री स्वामिनारायण का वास है।

इसके साक्षी श्री नरनारायणदेव गद्दी के आधीन राम बाग में स्थित श्री स्वामिनारायण मंदिर तथा श्री बालस्वरुप कष्टभंजनदेव मंदिर साक्षी है।

कांकरिया-हिंमतनगर मंदिर के नये महंत स्वामी की नियुक्ति

कांकरिया रामबाग अहमदाबाद : श्री स्वामिनारायण मंदिर के नये महंत स.गु. शास्त्री स्वामी श्री अभिषेकप्रसाददासजी गुरु स.गु. शास्त्री स्वामी श्री नारायणवल्लभदासजी (वडनगर) को नियुक्त किया गया है।

हिंमतनगर : श्री स्वामिनारायण मंदिर के नये महंत स.गु. शास्त्री स्वामी श्री सद्‌गुणदासजी को नियुक्त किया गया है।

सम्प्रदाय के गौरव

प.भ. घनश्यामभाई शाह (एस.टी. से निवृत्त अधिकारी) के पुत्र डॉ. संजयभाई शाह अपोलो हास्पिटल भाट-गांधीनगर में सेवा देते है। उन्हे ता. ११-१-२०२५ के दिन मान.श्री पाटिल साहब के हाथो द्वारा टाईम्स आफ नेटवर्क द्वारा 'लीडर्स नव भारत एवार्ड' उनके टोमाकेर और आपका लीन सेवा के उत्तम कृत्य के लिये एवार्ड मिला है। पूरा धर्मकुल उनकी उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करते करते आशीर्वाद प्रदान किये है।

पूनम सत्संग सभा

श्री नरनारायणदेव की खुशी के लिये तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ आज्ञा तथा पूरे धर्मकुल की आशीर्वाद से एवम् अहमदाबाद मंदिर के पूज्य महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से पौष सुद-१५ पूनम ता. १३-१-२०२५ सोमवार सत्संग सभा, ठाकुरजी को थाल, संत-हरिभक्तो को भोजन एक निष्ठावान हरिभक्त के द्वारा पूर्ण किया गया था। कथा के वक्ता शास्त्री स्वामी नीलकंठचरणदासजी (कोटेश्वर)।

श्रीहरि के सातवे और आठवे वंशज के मुख से आर्शीवचन

– संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी–बापुनगर)

प.पू. महाराजश्री, पंटवटी कलोल मंदिर के साँतवे वार्षिक पाटोत्सव के अवसर पर, ता. ९-१२-२०२४ : जो कार्य करे वह हमारा होता है । यह संसार की रीति है । अच्छा लगे वह मेरा है । पी.पी. स्वामी ने जमीन की बात किये । यह मूलत अच्छी बात है ।

भारत देश के प्रशासन में ब्रिटिश सरकार प्रत्यक्ष भाग नही लेती थी । ब्रिटिश सरकार ईस्ट इंडिया कम्पनी के माध्मय से भारत का संचालन करती थी । महाराज का प्रभाव सभी के उपर था । इस कारण से कम्पनी के अधिकारी महाराज से मिलकर पूछे कि आप के पास मठ है कि नही ? आपके द्वारा जब इतने अच्छे क्रिया–कलाप किये जा रहे है । इसके लिये हम आप को कुछ जमीन देते है । महाराजने कहा कि हमे तो हाथ में एक रुमाल रखने का हक है । रुमाल की सुरक्षा करना, गिर जाने पर उसे उठाना पडे । यह सब मेइटिनेन्स का कार्य है । हम सभी महाराज के स्वभाव को स्वाभाविक चेष्टा के पदो में गाते है । वचनामृत तथा लीलाचरित्र में सुनते है । अहमदाबाद मंदिर में प्रतिष्ठा महोत्सव में आदमियो की भीड देखकर तथा चौरासी के श्रम रुपी उपाधियो का ताप हटाने के लिये महाराज उत्सव के अंत में गणेश को धोलका के रायण में छिपाये । अपने भाषा में कहे तो डिटोक्स करने के लिये । अभी नया आया है । डिटोक्स करना शरीर की शुद्धिकरण तथा दिमाग का शुद्धि करण मनुष्य को भीड से दूर जाकर शांत चाहिए । यह कर्तापण के भाव में नही आये । इस लिये यह एक लीला है ।

मंदिर का संकल्प तो महाराज किये ही थे । जब कालुपुर मंदिर की जगह दिये तब उस समय के जमीन का नक्शा और मूल दस्तावेज अपने पास है । जिसे लोगो के जमीन का नक्शा और मूल दस्तावेज अपने पास है । जिसे लोगो के लिये खुला नही किये है । पुराने प्रथा के अनुसार उसमें लिखा गया है कि अमूक गली में अमुक व्यक्ति के घर तक है । इसमें देखने जाये तो कालुपुर रेल्वे स्टेशन से सीदी सैयद की जाली तक सभी जमीन अपनी है । लेकिन अभी महंत स्वामीने बात कही है । इस प्रकार सब चला जाये । आप सभी को इतिहास का ज्ञान है । और याद भी रखना चाहिए । जमीन को निश्चित करने के लिये अधिकारी बोले कि ९९ वर्ष के पट्टे पर लिख देते है । महाराजजी बोले हमे जमीन नही चाहिए । इस पर हमे विश्वास नही है । कम्पनी के पास इतनी ही सत्ता थी । स्थायी देने का अधिकार उनके पास नही था । उस समय कागज को नाव द्वारा लंदन भेजा गया था । सूर्य–चंद्र का प्रकाश जब तक रहे वाला दस्तावेज जिस पर रानी का सिक्का–सील वाला कागज अपने पास है । अर्थात् महाराज तो शुद्ध खरा ।

संसार की तीन कहावतो में से एक अपने 'स्वामिनारायणिया' पक्का कहलाते है । तथा अपने बाप कितने पक्के होगे । महाराज कच्चा नही रखते । महाराज बोलते थे । मध्य में रखना हमे पसंद नही है । देना है तो पूर्ण करे । महाराज यह हर जगह पर ध्यान दिये है । इस लिये मैं वहीवट में ध्यान देता हूँ । महाराज जब चौरासी किये थे ।

तब का कागज पडा है । हम लोगो की समस्या है कि म्यूजियम में जाकर बापजी का दर्शन करके गपशप करते बाहर जाते है । वास्तव में यह प्रसादी का कागज पढकर समझने योग्य है । सभी पत्र बड़े अक्षरो में करवाने का विचार है । चौरासी के पहले अग्रणी भक्तो से बोले थे कि श्रेष्ठी से सामान लेने से पहले बचने वाले पदार्थ को वापस लेगे । ऐसी शर्त के साथ सामान लाना । सोचे यह कितने सोचने योग्य बात है । यह लोभ का भाग नही है । यह प्रबन्ध है । लोभ वृत्ति अलग होती है । अन्य जगह पर भेजे यह लोभ वृत्ति है । छोटी से छोटी वस्तु का महत्व होता है । क्योकि यह तो देव का है । भगवान का है । हम जिनकी भजन करते है । जिसे सर्वोपरि मानते है । प्रातः जिनका स्मरण और वंदना करते है । जिन से अपना अस्तित्व है ।

प्रहलादभाई बैठे है । करजीसण की क्या दशा है ? साक्षात् उदाहरण है । मोखासण की दशा क्या है ? ऐसे २५ उदाहरण दे सकता हूँ । लेकिन ये तो सामने बैठे है । इस लिये यह याद आया है । भविष्य में हमे यह नही देखा है । हम बाप के है कोई धोखा देगा तो हम क्या कर सकते है । सोचिये आप मंदिर में आये है । और् पोकिट चोरी कर ले तो आप क्या करेगे ? पाकिट कट जाये तो ठीक है । पैसे तो कमा सकते है । लेकिन कोई श्रद्धा के साथ ठगाई करे । तो पुनः वापस नही ला सकते है । अपने श्रद्धा के साथ कोई खेल करे तो उससे सावधान रहना चाहिए। महाराज सावधान रहने का भी सत्संग किये है । शिक्षापत्री में महाराजने आज्ञा किया है कि प्रीति करते हुए सावधानी पूर्वक हमारी आज्ञा का पालन करे । हमें यही करना है ।

अभी हम महंत स्वामी से बोले है । आप तो दिमाग हिला दिये । चारो तरफ जगह है । बडा प्रबन्ध छोटी सी उम्र है । हमे कहाँ पर बड़ा प्रबन्ध करना है । हमे जो ज्ञात ही नही होता कि इतनी ब्ड़ी मजदूरी करना है? वास्तव में कुछ भी नही है । हम चले जायेगे । कोई दूसरा इस स्थान पर बैठेगा । मंदिर मात्र दिशा दिखाने के लिये है । इससे संस्कार बचा सकते है । मंदिर से अपनी गति किस तरफ होगी । उसका हम सभी को ज्ञात है ।

अपनी मंडप के उपर से छोटा पत्थर गिरा है । संसार इसे शुभ कहे अच्छी बात है । लोक चमत्कार भी बता सकता है । यह चमत्कार पुस्तक में भी लिख दी जाये । कलोल में ऐसा हुआ भी है । ऐसा प्रारम्भ हो जाता है । तांत्रिक, जंत्रिक एवम् मंत्रिक ये सभी आते है । लेकिन भगवान नही आते है । सभी कुछ होता है । लेकिन मनुष्य बनने में कष्ट होता है ।

कुछ भाईयो को माला पहनाकर घुमा दिया जाता है ? आप माला बहनो के विभाग में देदे । वही माला फेरती है । माला की एक कहावत है । माला तो हाथ में फिरती है । जीभ मुख में फिरती है । मन तो चारो तरफ धुमता है। तो राम कहां से आयेगे ? माला फेरते फेरते मन चारो तरफ धुमता है । घडी में कुछ तो घडीभर मे भोजन के फिराक में पड जाता है । मन कहाँ-कहाँ नही घुमता है ? माला तो साधन है । लक्ष्य नही । कोई भी वस्तु साधन है । भगवान साध्य है । साधन साध्य नही हो सकता है । कईबार बोले है कुछ लोग टिक-टिकिया भी रखते है । बैठे रस्ते है और टिक-टिक करता है । मै भी में रखता हूँ । कितनी कसरत हो जाती है उसे याद रखने के लिये । अब तो इलेक्ट्रीक आ गयी है । पता नही महाराज गणित के मास्टर होगे ऐसा मानकर गोपालानंद स्वामी, मुक्तानंद स्वामी, ब्रह्मानंद स्वामी, नित्यानंद स्वामी, गुणातीतानंद स्वामी आदि संत बैठे थे । महाराजजी पूछे कितनी माला फेरते हो । तभी संतो ने कहा केवल एक माला फिर जाये तो अच्छी बात है । संतोने निष्कपट बात कही थी । शेष टिक टूंकिया से कुछ लाभ नही है । अभी पत्थर का चमत्कार देखे है । भगवान के सहारे बैठे है । शेष दुनिया कार्यरत है । संसार में क्या नही होता ? कुछ क्या होने पर वह चमत्कार मे शामिल हो जाता है । शास्त्रो में लिख दिया जाता है । मनुष्य का मन हर जगह खेलता है । बुद्धि से विचार करने का समय नही

मिलता है । अपने बुजुर्ग खेत में भी पाँच बार मन से पूजा कर लेते है । घर से कोई नास्ता ले जाये तो नास्ता कर लेते है । थोडी समय बात भी कर लेते है । आज वोटसएप पर बात चलती है । एक दूसरे के लिये समय का अभाव है । स्वयं के लिये भी समय नही है । थोडे समय एकांत में बैठे तो ज्ञान आये ।

मोखासण का उदाहरण मैं हमेशा देता हूँ । वहां राधाकृष्णदेव मंदिर के सामने दर्पण रखा है । मैं कहाँ पर खडा हूँ । यह देखने के लिये रखा है । मंदिर में जाने के बाद वापस अपने पर कुछ बदलाव आया है कि नही यह देखने के लिये दर्पण रखा गया है । लोग दर्पण के सामने खडे होकर बाल अच्छा संवारकर चेहरा दख कर आ जाते है । प्रातः काल की पूजा में छोटे दर्पण में तिलक टेढा-मेढा हो जाये तो कोई बात नही है । लेकिन यहाँ पर अन्तर आत्मा में क्या है । उसे देखने की आवश्यकता है । हम सभी भाग्यशाली है कि हमे ऐसे मंदिर मिले है । ऐसे संत मिले है । ऐसे हरिभक्त मिले है । जिसे भगवान पर विश्वास है । इस लिये यह अवस्था है । तीन दिन से वडु-गांधीनगर में घुम रहे है । आप लोगो से मिलते है । इसी में आनंद है । आपका भगवान के प्रति ममत्व है । सत्संग के प्रति लगाव है । इस लिये सत्संग में भीड होती है । बच्चे-बच्चियो को यही सिखाना है । शेष अपना दिमाग नही चलाना है। क्योकि महाराज ने २१२ श्लोको में शिक्षापत्री लिखे है । अपने बुद्धि का प्रयोग नही करना है । भगवान की आज्ञा में रहे । आज्ञा में रहकर आनंद करे । पूरे दिन जो व्यापार या व्यवहार किये हो । वह शायं काल में देव का दर्शन करके समाप्त कर दे । बुद्धि साफ हो जायेगी । डिटोक्स भगवान के द्वारा होता है । साबुन से जैसे शरीर स्वच्छ होता है । इसी प्रकार मन, बुद्धि और स्वभाव मंदिर से स्वच्छ होते है । मंदिरो अपने पोषण है ।

सभी का अभिनंदन, विशेष करके यज्ञप्रकाश स्वामी **Highly Active** (अधिक सक्रिय) है । अमेरिका में टर्बो मोड होता है । नारायण स्वामी बडे है । तो भी टर्बोमोड में है । गाँव में जाकर हरिभक्तो का पोषण करते है । हरिभक्त भी डबल टर्बोमोड मे है । क्योकि प्रतिदिन उत्सव, समैया करना छोटी बात नही है । कठिन कार्य है । संतो यहाँ पर विशेषकर उत्तम स्वामी कथा वार्ता से सत्संग सम्भाले है । इसके आप सभी को सम्भालने है । गाँव मुझे प्रिय लगता है । लेकिन गाँव खाली हो रहे है । इसमें वोरीयत लगती है । फिर भी अच्छा है कि उत्सव, समैया और कथावार्ता होती है ।

अपनी भूमि, जन्म स्थान, अपने पुरखो की जगह सुरक्षित रहे । सत्संग की जड सुरक्षित रहे । विशेषकर ये मंदिर सुरक्षित रहे । उस पर ध्यान देना है । कुछ लेना नही है । यह मेरा वस्त्र देव का है । गाडी नरनारयणदेव की है । गाडी हमारी नही है । नाम लेकर चेक कर सकते है । अब तो **On line** पता चल जाता है । खुला आमंत्रण है । कपडा का बिल मंदिर में आता है । रक्त और श्वास की बिलिंग मंदिर में जाती है । हमारा क्या है ? वास्तव में देखे तो सब कुछ आचार्य का है । देश विभाग का लेख पढे । द्रव्य, वस्त्र, पशु, वाहन, माणेक, मोती, कंकड सब कुछ आचार्य की व्यक्तिगत सम्पदा है । उसमें कल साधु, ब्रह्मचारी, पाला, हरिभक्तो किसी समय दावा नही कर सकते है । तो भी हमने क्या रखा है । यह जंजाल लेकर कहाँ पर घुमना है ? मेरा अपना था । वह भी छोड दिया । एक भगवान को रखने पर सब कुछ मिल गया । भगवान को नही रखते तो कही जगह नही मिलती । भगवान का भगवान को अर्पण करके इतने में ही सुख है । आज मैं सुखी हूँ । हँस रह हूँ । बोल रहा हूँ । इसके कारण जो भगवान बैठे है । इसी लिये हमे चिंता नही है । हमे अहंकार आयेगा तो सब कुछ समाप्त हो जायेगा । यह सब मात्र देव का है । हमें उद्यम परिश्रम करना है । आप की दुकान लिखने के लिये नही कह रहा हूँ । यह आप की आवश्यकता है । यह न होने पर धर्मादा कहा

से आयेगा ? आप सभी धर्मादा देते है । सब प्रकार का सहयोग करते है। तभी देश-दुनिया में मंदिर बनते है। और उत्सव मनाया जाता है।

इस तरह एकत्र होकर बाते करे । इससे भगवान खुश हो ऐसा कर्म करे । यही नरनारायणदेव की चरणो में प्रार्थना है।

प.पू. लालजी महाराजश्री, मोयदधाम, श्रीमद् भागवत पंचान्ह कथा के अवसर पर ता. २०-१२-२०२४ : स्वामिनारायण भगवान हम सभी पर कृपा करके ऐसा सत्संग जब दिये है। तब हम लोगो का एक कर्तव्य है । कि सत्संग में जुडे । और भगवान की आज्ञा में रहे।

मनुष्य की प्रकृति ऐसी होती है कि जब उसे कुछ सरलता से प्राप्त होता है तो उसे वह पचा नही पाता है। भगवानने हमको क्या करना है ? क्या नही करना है ? किस रुप से जीवन जीये । कैसे नही जीना चाहिए । कहाँ से प्रसाद ले कहाँ से नही ले ? किस मूर्ति की पूजा की ? किसकी पूजा नहीं करे । किन लोगो का साथ करे ? यह सब हम लोगो को सीधे भगवान बताये है। इतने सरलता से मिल जाने से अपना कार्य सरल से हो जाता है। आज कल लोग षडयंत्र करने में अधिक मानते है।

मूल स्वामिनारायण सम्प्रदाय अधिक पार दर्शक है। तथा यह सरल भी है। कोई गलत एजेन्डा छिपा हुआ नही है। भगवान की भजन-भक्ति हो, कथा-वार्ता हो ऐसे साधन भगवान दिये है। इसलिये स्वामिनारायण सम्प्रदाय में जीवन जीना तथा जीव का कल्याण का मुख्य ध्येय है। कैसे लोग इस लोक तथा परलोक में सुखी रहे । उसकी सुविधा महाराज दिये है। हम सभी भगवान के बन कर रहे । शिक्षापत्री भगवानने दिये है । वचनामृत महाराज की परावाणी है। महाराजने कहा है कि मेरी वाणी यह हमारा स्वरुप है। हमे सभी इस शास्त्र को सुने । उसे समझे, पढे तथा सम्प्रदाय के मूल सिद्धान्त से जुडे रहे । आजकल लोग सत्संग से दूर हो रहे है । यह सब सोसल मिडीया के द्वारा हो रहा है। सोसल मीडिया कोई खराब माध्यम नही है । इसके कारण सूचना over load हो जा रही है। कौन सी बात माने । क्या नही माने ? यह प्रश्न युवको में जागृत हो रहा है। लोगो के मन में द्विविधा Confusion आ रहा है। सत्य क्या है ? और किसका पालन करे ? देखने में तो सब अच्छा है। जो लोग पीढीयो से सत्संग में उन्हे तो नही, लेकिन जो लोग नये है। उन्हे समझ में नही आता है। हम लोग भगवान को पहचाने है । वे लोग पहचाने नही है । उसके लिये जरुरी है। जो शास्त्र भगवान दिये है। इसका अध्ययन करे । आचार्यश्री के द्वारा दीक्षित संतो के मुख से कथा-वार्ता सुने।

आज से २०० वर्ष पूर्व महाराज ने सम्प्रदाय की स्थापना किये थे । तबसे महाराज को ज्ञात था कि ऐसा समय आगे अवश्य आयेगा । आप सोचे ! हमे आज ऐसा शब्द क्यो प्रयोग करना पड रहा है। ''मूल स्वामिनारायण सम्प्रदाय'' । महाराज को ज्ञात या कि आज भी यह समय आने वाला है । लोक सच्ची बात से दूर हो जायेगे । हम सभी मूल सम्प्रदाय की धारा से जुडे रहे।

ऐसी व्यवस्था महाराजने हम सभी को देते है। जो शास्त्र भगवान ने हम सबको दिये है। ये शास्त्र भगवानने दिया है। इसके आगे कुछ शेष रहता नही है। सभी आदेश स्पष्ट दिये है। इसमें कुछ जोडना नही है। कुछ काम भी नही करना है। हमे आज्ञा का पालन करना है।

हम लोगो को सरलता से मिला है । इसके लिये भगवान को प्रतिदिन धन्यवाद देना चाहिए । सम्प्रदाय में गुणभाव से गुण बुद्धि से और प्रेम से रहे। यहाँ पर आकर आनंद आया । इस गाँव के हरिभक्त गाँव में तथा विदेश में भाव प्रेम से सत्संग करते है।

इतना कहकर अंत में सभी को आशीर्वाद दिये थे।

अपने हरि मंदिर तथा प्रसादी के स्थल (सादरा-वासणा देश)

– बिपीन पटेल (गांधीनगर)

श्रीहरिने गुजरात की धरा को अपने चरणो के रज से अंकित करके पवित्र कर दिये है। गुजरात के उत्तर देश में स्थित गांधीनगर के समीप ''सादरा-वासणा देश'' की पवित्र भूमि पर दर्शन करते करते आगे के लेख ४ में देहगाम और वासणा राठोड के प्रसादीभूत गाँवो के महात्मका स्वाद मिलेगा।

आइये अब शास्त्रो के आधार पर स्वयं दर्शन का लाभ लिये। अब माणवा परढोल, सोनारडा का पवित्र दर्शन, महात्म का लाभ ले।

अब परढोल गाँव के दर्शन के लिये चले। और नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर परढोल की महिमा जाने।

(३) परढोल : वासणा - राठोड गाँव का दर्शन करके आगे जाने पर ६ कि.मी. की दूरी पर नरोडा-देहगाम रोड पर परढोल गाँव आता है।

प.पू.ध.धु. १००८ आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से तथा प्रत्यक्ष देखरेख मे श्री स्वामिनारायण मंदिर परढोल का निर्माण किया गया है। अत्यधिक सुंदर नयनरम्य शिखरबद्ध मंदिर जैसा हरिमंदिर बनाया गया है। परढोल मंदिर में देवो की प्रतिष्ठा ता. ५-१२-२०२३ के दिन प.पू. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा किया गया है। मंदिर में सिंहासन के मध्य स्थान पर विराजमान घनश्याम महाराज तथा बगल में श्री नरनारायणदेव और बाये तरफ श्री राधाकृष्णदेव की संगमरमर की मूर्ति का दर्शन होता है।

परढोल के समीप महाप्रसादीभूत वहेलाल गाँव आता है। जिसका समावेश कणभा देश के अन्तर्गत है। इसकी महिमा भी अविस्मरण है।

आईये आगे सोनारडा गाँव में स्थित नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर, सोनारडा दर्शन के लिये चले।

(७) सोनारडा : परढोल से नरोडा-देहगाम रोड पर आकर वहाँ से ४ कि.मी. की दूरी पर दहेगाम जाते समय आता है।

सोनारडा गाँव का इतिहास सोने जैसा स्वर्णमयी है। मुक्तानंद स्वामी जब वडोदरा की धर्मसभा में जीत करके जिस दिन ध्वज लहराकर आये। तब वडोदरा के महाराज सयाजीराव गायकवाडने वडोदरा में आमंत्रण देकर बुलाये थे। श्रीजी महाराज ने जोबन पगी जैसे डाकू को संत और सत्संगी किये। यह बात सुनकर महाराज खुश हुए। श्रीजी महाराज का दर्शन करके राजा ने दो हाथी उपहार में दिये थे। तब महाराज ने कहा कि हम तो ब्राह्मण है। हाथी का पोषण हम कैसे कर सकते है। राजा ने दो गांव भेट में दे दिये। वे दो गाँव सोनारडा और दूसरा कलोल के पास आये। इसंड गाँव है। सयाजी ने कहा कि इस दो गाँव के उपज को आप हाथिओ के पालन पोषण हेतु रखे। श्रीजी महाराज को मिले इन गाँवो की महिमा अधिक है। गाँव में प्रवेश करते ही सुंदर प्रवेश द्वार बना है।

प.पू.ध.धु. १००८ आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के देख-रेख में नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर, सोनारडा का निर्माण हुआ। निज मंदिर में देवो की प्रतिष्ठा प.पू. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा १७-०१-२०२३ के दिन किया गया। सुंदर नक्कशी वाले सिंहासन के मध्य श्री घनश्याम महाराज तथा दाये भाग में श्री नरनारायणदेव तथा बाये तरफ श्री राधाकृष्णदेव दर्शन दे रहे है। मंदिर में अच्छा सामुदायिक हाल भी है। जो कथा धुन तथा सामाजिक अवसर पर लाभ देता है।

ऐसे सुंदर गाँव में नये भव्य मंदिर का दर्शन का लाभ अवश्य ले।

श्री
स्वामिनारायण
म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

सभी हरिभक्तो की सुविधा के लिये
प.पू. आचार्य महाराजश्री एवम् समग्र धर्मकुल के संकल्प से
इस वर्ष से

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के नये स्थापना दिन हर वर्षे दि. २९ मार्च के दिन पर मनाया जायेगा

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री महाविष्णुयाग की सूची-जनवरी-२०२५

ता. ०१-०१-२०२५ प.भ. कांतिभाई गोकलदास पटेल – वडुवाले – प्रे. स्वामी यज्ञप्रकाशदासजी महंतश्री कलोल पंचवटी।

ता. ०३-०१-२०२५ प.भ. केतनभाई केशवलाल फीचडिया – मणीनगर।

ता. ०५-०१-२०२५ प.भ. विष्णुभाई हरगोविंददास पटेल – देउसणावाले – भानजे देव के जन्म दिन के अवसर पर – राणीप।

ता. ०६-०१-२०२५ प.भ. प्राप्तिबेन जीगरभाई – जीवराजपार्क।

ता. १३-०१-२०२५ प.भ. डॉ. सिमोन्स जसुभाई चौधरी – सोलैया (माणसा) – वर्त. पोपटभाई विरजीभाई चौधरी – कोठारी।

ता. २६-०१-२०२५ प.भ. जागृतिबेन राजेन्द्रभाई पटेल – मणीनगर।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में भेट देनेवालों की सूची-जनवरी-२०२५

रू।. ११,००,०००/- प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू.अ.सौ. वड़ी गादीवालाश्री और पूरे धर्मकुल की खुशी से आदर्, भाविक, संजयभाई पटेल रामदासबापा परिवार – उनावा।

रू।. ५१,०००/- प.भ.श्री जयेन्द्रभाई सी. सोनी – पलियडवाले – जे.सी. ज्वेलर्स।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये – श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला ५/१०/२० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

સંપ્રદાયમાં એક માત્ર વ્યવસ્થા શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમમાં મહાપૂજા / મહાભિષેક નોંધાવવા સંપર્ક કરો.
મ્યુઝિયમ મોબાઈલઃ- ૯૮૭૯૫૪૯૫૯૭, પ.ભ. પરષોત્તમભાઈ - દાસભાઈ (બાપુનગર) : ૯૯૨૫૦૪૨૬૮૬
www.swaminarayanmuseum.org/com • email: swaminarayanmuseum@gmail.com

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) एकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "कृपापात्र बनने के लिये लगातार प्रयास करे"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

अभी कथा में सुने ही है कि भगवान के एक-एक रोम में कितना अधिक सुख है। आप सोचे कि छपैया में भगवान की जन्मभूमि है। वहाँ जाने पर वहाँ की धरती पर पैर रखते ही। बाल स्वरुप घनश्याम महाराज की मूर्ति देखकर सारे 'संकल्पृविकल्प' बंद हो जाते है। आंतरिक सुख शांति मिलती है। जब हम प्रत्यक्ष महाराज से मिलेगे तो कैसी अनुभूति होगी। प्रत्यक्ष महाराज से मिलना हो तो शुद्ध बनना पडेगा। जिस वातावरण में रहते है वैसे ही मन बनता है। जीव जब इस संसार में आता है तो ६०% सतोगुणी होता है। रजो, तमो गुण कम होता है परिस्थिति के अनुसार गुण आते है। प्रकृति के धागे से जीव बँधा होता है। इस प्रकार चार प्रकार की अवस्था युक्त मुष्य दिखाई देते है।

(१) मूढ अवस्था : मूढ अवस्था वाले लोग तमो गुण प्रधान होते है। तमो गुण के कारण ये लोग आलसी होते है। तमोगुण वाला भोजन ग्रहण करते ही। नीद आती है। काम करने का मन नही कहता है।

(२) क्षीप्त अवस्था : यह रजोगुणी प्रधान होते है। यह अपना ऐश्वर्य बढाने में लगे रहते है। धन, सुख के प्रति लगाव रखते है। रजोगुणी का मन स्थिर नही रहता है। ये मन से चमल होते है।

(३) विक्षिप्त अवस्था : विक्षिप्त अवस्था वाले लोगो में सतोगुण प्रधानता होती है। सतोगुणी व्यक्ति मे मन की स्थिरता नही रहती है। ध्यान में बैठने पर दूसरी बाते याद आती है। परिणाम स्वरुप मन असांत हो जाता है। फिर भी भगवान के प्रति मन लगा रहता है। भगवान मे कितना लगा रहता है। कर्म बंधन ठीला हो जाता है। कल्याण सरलता से होता है।

(४) निरोध अवस्था : यो लोग तीनो अवस्था से उपर चले जाते है। इसे समाधि की ''सर्वातीत उत्तम अवस्था कहते है। लेकिन कलियुग में निरोध अवस्था में जाना कठिन है। नरनारायणदेव की अति ''कृपा'' होने से ही निरोध अवस्था तक जा सकते है।

आप सभी सतोगुणी है। इस लिये यहाँ पर बैठे है। आप सभी दर्शन पूजा करते है। फिर भी किसी अवस्था में विचल जाते है। क्योकि हम माया के संसार में रहते है। माया का प्रभाव पडना ही है। माया में आ ही जाते है। लेकिन हम लोगो को ''नरनारायणदेव'' मिले है। वे कल्पवृक्ष के समान है। जो माँगेगे वह मिल जायेगा। ''नरनारायणदेव'' पूरे भरत खंड के राजा है। इन्हे छोडकर लोग दूसरी जगह पर भटकते है। वे मूर्ख समान है। हमारी उपासना शुद्द होनी चाहिए। अपना अंतकरणशुद्द रखना चाहिए। ब्रह्मा इत्यादि जिस सत्संग के लिये तरसते है। वह सत्संग हम लोगो को मिला है। नरनारायणदेव के कृपा पात्र बनने के लिये सदैव प्रयत्न करते रहना चाहिए। लौकिक संसार में भी हमने किसी का गलत किये होगे तो आँख मिलाकर नही चल सकते है। अपने तो नरनारायणदेव के सामने दर्शन करने के लिये खडे रहते है। उनके आँख मे देखकर दर्शन कर सके हमें ऐसा बनना है। नरनारायण के सामने खडे रहने पर अपना अन्तकरण कमजोर क्यो हो जाता है। जब आप दर्शन करेगे तो आप के अन्दर सतोगुण होगा तो आप के दोष आप को याद आयेगे। यह अच्छी बात है। भगवान आप को संकेत दे रहे है। कि आप मे जो अवगुण है। उसे याद दिलाते है। भगवान संकेत करते है कि यह आप में दोष है। इसमें से आप निकल जाओ। यह एक अच्छा लक्षण है। हमें घबराना नही है कि इतना सारा पाप मुझमें भरा पडा है। कि मैं बहुत खराब हूँ। ऐसा अनुभव नही करना चाहिए। भगवान ने आप के उपर कृपा किये है। आप को सुधारना चाहते है। इसलिये प्रेरणा कर रहे है। अपने भूल सुधारने के लिये भगवान अवसर दे रहे है। सुधारो के लिये लक्ष्य की तरफ बढना चाहिए। आप जैसे मंदिर आते समय अलग-अलग रास्ते से आते है। अन्तिम में

सभी मार्ग यहाँ पर एक हो जाते है कैसे ? सभी लोग मोक्ष के प्रयाण के लिये यहाँ इकड्डे हुए है । यह 'सत्संग' एक ऐसा रास्ता है । जहाँ पर सभी रास्ते एक हो जाते है । सत्संग में आने पर सभी साधनमिल जाते है । किसी को श्रवण भक्ति अच्छी लगती है । किसी को कीर्तन भक्ति अच्छी लगती है । किसी को दास भक्ति अच्छी लगती है । किसी को कथा-वार्ता अच्छा लगता है । किसी को प्रदक्षिणा अच्छा लगता है । सत्संग में से नवधा भक्ति का रुप प्राप्त होता है । यह सब भगवान तक जाने के साधन है । इतना सब सत्संग से मिलता है । मन को नियंत्रण करके थोडा कठोर बनकर भक्ति कर लेना चाहिए । लोग कहते है कि कलियुग में गलत करने वाले अधिक सुखी है । अभी तो कलियुग चल रहा है । इस लिये ऐसा होता है । जैसा लक्षण राजा में होता है । ऐसे लक्षण वाले व्यक्ति राजा को अच्छे लगते है । हमे बाहर से ऐसा लगता है । वास्तव में ऐसे लोग सुखी नही होते अंदर से कमजोर होते है । महाभारत के युद्द के बाद भीष्म पितामहर जब मृत्यु की बाणशैया के उपर सोये थे । और सूर्य नारायण उत्तरायण हो उसका समय देख रहे थे । तब कृष्ण उन्हे दर्शन देने के लिये आये । तब भीष्म पितामह ने भगवान श्री कृष्ण से महाभारत के युद्ध का वर्णन पूछे कि युद्ध में 'छल' 'कपट' अनीति सब कुछ हुआ । क्या यह आप को शोभा देता है । आप त्रेता में मर्यादा पुरुषोत्तम राम थे । जो आज भी है । तो श्रीकृष्ण भगवानने उत्तर दिये कि ''रामावतार में हमारे सामने खलनायक के रुप में रावण था । रावण कैसे थे ? महान पंडित तथा शिवज्ञानी थे । और विभीषण जैसा भक्त उनका भाई था । इस कृष्णावतार में जरासंघ, शिशुपाल जैसे लोग मिले है । 'कृष्ण भगवान का बताने का मुख्य कारण था कि युद्ध में पाप को समाप्त करना था । इसलिये युग, समय और शत्रु के हिसाब से कदम उठाना पडता है । तो भीष्म पितामह बोले ''यह देखकर भविष्य मे क्या विचार करेगे ?'' कृष्ण जी बोले आगे कलियुग आ रहा है । समय अति खराब आयेगा । समय के आधार पर अधर्म का नाश करना पडता है । इतिहास से हमे ज्ञान लेना चाहिए । वर्तमान का व्यवहार देखकर करना चाहिए । समयानुसार कर्म होते रहते है । कर्म पर प्रारब्ध बनता है । प्रारब्ध के आधार पर फल मिलता है । पुरुषार्थ से प्रारब्ध मिटाया जा सकता है । कुछ कर्म तीव्र प्रारब्ध बन जाते है । उसे भूगतना ही पडता है । उसे टाल नही सकते है । ऐसा प्रारब्ध भगवान की कृपा पाकर ही समाप्त किये जा सकते है । जिस प्रकार किसी अपराधी की फाँसी की सजा का आदेश हो गया हो । उसी कोई माफ नही कर सकतै है । यदि अपराधी राष्ट्रपति को पत्र लिखे वह स्वीकृत करे तभी सजा माफ हो सकती है । हमारा ऐसा प्रारब्ध होना चाहिए । यदि नरनारायणदेव की कृपा हो तो अपराध माफ हो जाता है । इस लिये सदैव भजन करे । और गलत कर्म नही करे । ज्ञात रुप से मनसा, वचसा, कर्मणा, गलत कर्म नही करना चाहिए । सतोगुण बढे ऐसे कार्य करे । भगवान के कृपा पात्र बन सके ऐसा कर्म निरन्तर करे ।

•

श्रीहरि वनविचरण क्रमश अयोध्यापुरी

- लाभुबेन मनुभाई पटेल (कुंडाल, तालुका-कडी)

अयोध्या में घर नाजुक, कमजोर और स्वच्छ है । आँगन में दिन्दुदर्म आधारित पानी रखने की जगह और सामने विघ्नविनशक गणपति महाराज की स्थापना है । श्रीहरिने अयोध्या में भी छपैया कीतरह अनेक लीलाये किये है । इसमें सुवासिनीजी की अँगुठी लेकर हलवाई के दुकान पर जाकर सारी मिठाई खा गये थे । यह देखकर हलवाई आश्चर्य चकित हो गया था । अब घनश्याम को गृहत्याग करना है । इसलिये शुभ दिन का रास्ता देख रहे थे । गृह त्याग से पहले माता-पिता को दिव्य गति प्रदान किये । आज घनश्याम महाराज के दो श्लोक सत्संगिजीवन को समझाये है । इसके बाद गृह त्याग, वन विचरण में कोई विघ्न नही आये । इस लिये गणपति महाराज को नम्र भाव से प्रार्थना किये है । प्रत्येक मनुष्य के जीवन में आने वाला दुःख दूर हो । इसके लिये गणपति महाराज की स्तुति करना चाहिए । गणफतिजी के स्तुति के समय घनश्याम महाराजने ''विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय.... इस श्लोक को एकाग्रचित होकर प्रार्थना किये थे । वन विचरण करके लाखो नही करोडो जीवो को कल्याण किये है । अर्थात् संवत १८४९ के अषाढ सुद दशमी शुक्रवार के दिन प्रायः पवित्र काल में अनिर्देश से इस लोक में आये । संकल्प को साकार करने के लिये घर से सीधे शरीर के

उपर आभूषण का त्याग करके वल्कवस्त्र धारण करके शालीग्राम को लेकर, गुटका (पुस्तक) तूंबडी, डोरी, जयपात्र, पलास का दंड, मूली की मेखला, माला, जनेउ, कोपिन, मृगचर्म वस्तु के साथ वन विचरण में चल दिये। कम उम्र में तीव्र वैराग्य धन्य है।

(१) ''कहाँ बाल पन के खेल, कहाँ उच्च सिद्धि प्राप्त का लक्ष्य।''

(२) ''घनघोर रात अंधेरे वाली, प्रात की वेला, निकल पडे।

वन विचरण के लिये धर्म किशोर निकल गये। लोगो के दुख का निवारण करने के लिये। अनंत जीव के खराब कर्मो को समाप्त करने के लिये जीवात्मा को परमधाम ले जाने के लिये। गृह का त्याग करके वन में पधारे है।

•

जीवुबा का जीवन परिचय

– वीमाबेन नरेन्द्रभाई ठक्कर (बोपल)

भावनगर जिला के गढड़ा गाँव में एभल खाचर के पास दो पत्नियाँ थी। (१) कारियाणी के राजा नागर की बच्चे सुरप्रभा जिसेक द्वारा जीवुबा-लाडूबा, पांचुबा, नानूबा पैदा हुए थे।

(२) पत्नी बोटाद के राजा रायणगामी की बच्ची सोमा देवी थी।उनके द्वारा दादा खाचर पैदा हुए थे।

ऐभर खाचर को दो तीन बालक सुरप्रभा के द्वारा पैदा किये गये थे। लेकिन जीवुबा जीवित रही। उनका नाम जीवुबा रखा गया। यह सभी बच्चो में सबसे छोटी थी। तीसरे का नाम मोटीबा और चौथे का नाम जया था।

जीवुबा बालपन मे ही भजन-भक्ति में लीन। इस कारण से श्रीजी महाराजने बालमुकुंद नाम रखा था। जीवुबा, बालमुकुंद के स्वरुप की भाव से सेवा करती थी। यह सब देखकर ऐभल खाचर बोले बच्चि छोटी उम्र में यह क्या है। यह सब तो वृद्धावस्था में शोभा देता है। अभी तो भोजन करो, पहनो, तथा आनंद करो। पिताजी के वचन सुनकर जीवुबा कहती है पिताजी ! आप तो ज्ञानी है। वृद्धावस्था के वायदे न रहे। यह शरीर कब नष्ट हो जायेगा। किसे ज्ञात है ? ये लालजी तो प्रत्यक्ष परमात्मा है। मैं अपने लालजी को दूध रखते है। इसके बाद लालजी दूध पीकर लालजी दूध पीकर कटोरा ऐभल के उपर फेक दिया था। यह चमत्कार देखकर ऐभल खाचर बार-बार नमन करने लगे। यह परचा भक्तचिंतामी प्रकरण-१३२ में निष्कुलानंद स्वामीने लिखा है कि

तातने न गमतुं लगार, ते पण नव्या बारमबार ॥
धन्य बाई तमारी भगति, घेलाईमां मे न जाणी गति ॥१४॥

जीवुबा की उम्र हो जाने के बाद कुंडल के गाँव के धनी अमरावटनगर के पुत्र हाथिया पटगर के साथ विवाह किया गया। जीवुबा महाराज से प्रार्थना करते है। त्रेतायुग में जनकराजा के घर ''सीता'' रुप में जन्म लेकर रामचन्द्र का वरणा की थी। द्वापर युग में भीष्मक राजा के घर ''रुक्मणी'' के रुप में जन्म लेकर ''श्रीकृष्ण'' को वरी थी। कलियुग में ऐभल खाचर के घर जन्म लेकर ''जीवुबा'' अब स्वामिनारायण को वरी हूँ। आज लौकिक रुप से पर पुरुष का वरण की हूँ। मेरा नियम भंग न हो। पू र्व के मुक्त ऐसी जीवुबा के पति घर में प्रवेश किये। तो जीवुबा के जगह पर नागिन फूंकार मारती दिखाई दी। वह हरिकृपा से दिखाई दिया था। पति को लगा यह साधारण महिला नही है। इसके बाद शहबाई और अमरा पटगर जीवुबा को डोली में बैठाकर मानभेर गढडा पहुँचे थे।

जीवुबा साक्षात् लक्ष्मी की अवतार थी। महाराज की खूब सेवा किये। लाडूदानजी को उपदेश दिय। आँख खोल दी थी। श्रीहरि साधु दीक्षा देकर श्रीरंगदासजी का नाम धारण किये थे।

श्रीहरिने जीवुबा को नीरावरण दृष्टि दी थी। महाराज जो लीला करते थे। वह जीवुबा घर बैठकर देख लेती थी। पंचाला के आादिबाई जीवुबा के पास 'सतीगीता' का अध्ययन की थी। गढडा गाँव के रतनबाई भावसार मोटीबा को दर्शन दिये थे। तभी मोटीबा ने कहा ''तुम्हारे पेट मे लडका है। तु मुझे छूना मत यही तक रहना।''

ऐसी सांख्ययोगी कर्मयोगी साक्षात् लक्ष्मीजी के अवतार – निरावरण दृष्टि वाले – सेवा भावी जीवुबा, विक्रम संवत १९१६ को ज्येष्ठ मास में स्वतंत्र समाधि लेकर अक्षरधाम सिद्धी थी।

सत्संग समाचार

पवित्र धनुर्मास में विश्व के सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर आयोजित नवनिर्मित श्री स्वामिनारायण मंदिर शीलज के लाभ हेतु श्रीमद् भागवत रात्रीय सप्ताह पारायण

परब्रह्म परमात्मा सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की पूर्ण कृपा से श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. महंत शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के प्रेरणा से शीलज (अहमदाबाद में) नूतन श्री स्वामिनारायण के जमीन को सम्पादन के लाभ हेतु श्रीमद् भागवत सप्ताह रात्रीय पारायण का अच्छा प्रबन्ध पवित्र धनुर्मास में पौष सुद-७ ता. ७-१-२०२५ तक सम्प्रदाय के सुप्रसिद्ध कथाकार पू. स.गु. शा. स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) के वक्ता पद से उल्लासपूर्वक पूर्ण किया गया । जिस में बोडकदेव, थलतेज, साईस सीटी और शीलज के हजारो धर्मप्रेमी कथा प्रेमियो ने भाग लिया था । पूरे अवसर पर नूतन मंदिर के भूमिपूजन के यजमान प.भ. हीराभाई ठक्कर (थलतेज) वर्त. तेजलबेन विजयभाई ठक्कर, प्रियाबेन संकेतकुमार, कथा के मुख् ययजमान प.भ। महेशभाई लालभाई पटेल, वर्त. रेणुकाबेन महेशभाई पटेल, पोथीयात्रा भोजन के यजमान गं.स्व. लीलाबेन नारायणभाी पटेल, वर्त. हर्षदभाई, संत पूजन के यजमान प.भ. घनश्यामभाी सोमदास पटेल (डांगरवा) आदि अनेक हरिभक्त बडी सेवा दिये थे ।

ता. ५-१-२०२५ के दिन प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे । आपश्री के करकमलो द्वारा नये मंदिर का भूमि पूजन और शाकोत्सव धुमधाम से मनाया गया था । उसी दिन बहनो को आशीर्वाद देने और कथा सुनाने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री पधारे थे । आयोजन श्री स्वामिनारायण मंदिर शीलज श्री नरनारायणदेव सत्संग मंडल बोडकदेव, थलतेज, शीलज और सांईस सीटी के सहयोग से पूर्ण किया गया । धामोधाम से अनेक पूजनीय संत पधारे थे । पूरे सभा का सुंदर संचालन सगु. शा. स्वा. नारायणमुनिदासजी (कोठारी कालुपुर मंदिर) ने किया था । (श्री नरनारायणदेव सत्संग मंडल बोडकदेव, थलतेज, शीलज, सांईस सीटी)

विश्व के सर्वप्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर आयोजित नवनिर्मित रासयण (पी.डी.पी.यु.) गांधीगनर के लाभ हेतु श्रीमद् भागवत रात्रीय पंचान्ह पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की अनहद कृपा से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के संकल्प आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से कालुपुर मंदिर के पूज्य महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के अच्छे मार्गदर्शन में पवित्र धनुर्मास में गांधीगनर के रमणीय सुंदर अच्छे क्षेत्र रासयण (पी.डी.पी.यु.) मे अपने स्थानीय हरिभ्कतो की संख्या बढती जा रही है । वहाँ पर श्री नरनारायणदेव के आश्रितो के लिये भगवान श्रीहरि का एक मंदिर रहे तो सुख मिलेगा । भविष्य की पीढी में संस्कार का सिंचन हो । अपने हरिभक्त निष्ठा से रहे । प.पू. आचार्य महाराजश्री नरनारायणदेव को पधारतेने का संकल्प लिये है । जमीन और मंदिर के लाभ हेतु ता. ८-१-२०२५ से १२-१-२०२५ तक श्रीमद् भागवत रात्रीय पंचान्ह पारायण सम्प्रदाय के सुप्रसिद्ध कथाकार पू. शास्त्री स्वामी श्री रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) के वक्तापद से संगीत के साथ यहाँ के लोग मंदिर के लिये अच्छा फंड दिये थे । इस में लोग यजमान बनकर लाभ उठाये थे । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कई कार्यक्रम करते हुए । यहाँ पर आये थे । कथा सुनकर सभी को आशीर्वाद दिये थे । सभा का संचालन स.गु. शा. स्वामी नारायणणुनिदासजी (कोठारी कालुपुर मंदिर)ने किया था ।(शा. स्वा. नारायणमुनिदासजी)

डांगरवा गाँव में श्रीरि स्मृति पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से पू. स.गु. महंत शास्त्री स्वामी श्री पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर) तथा पू. स.गु. महंत स्वा. धर्मस्वरुपदासजी (नाथद्वारा) की प्रेरणा मार्गदर्शन से

श्रीहरि के अलौकिक चरण से पवित्र भूमि डांगरवा गाँव में अ.सौ. मधुबेन कांतिलाल पटेल (दलाल) के शुभ संकल्प से स.गु. श्री निष्कुलानंद स्वामी रचित श्रीहरि स्मृति कथा पारायण सम्प्रदाय के सुप्रिसद्ध कथाकार पूज्य शास्त्री स्वामी श्री रामकृष्णदासजी (कोटेश्वरवाले) के वक्तापद से हजारो कता प्रेमी भक्त कथा सुने ते । ता. ९-१-२०२५ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । गाँव के मंदिर में आरती दर्शन करके कथा के अवसर पर पधारकर यजमान परिवार प.भ. कांतिलाल पटेल (दलाल) को आशीर्वाद दिये थे । प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्रीने बहनो को आशीर्वाद दी थी । पूरे सभा का संचालन स.गु.शा. स्वा. वासुदेवचरणदासजी (पोरडा)ने किया था । धामो-धाम से अनेक संत पधारे थे ।(कोठारीश्री डांगरवा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गोधावी (बहनोका) मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव और कथा पारायण

सर्वोपरि आराध्येदव श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा तथा प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री के आशीर्वाद के साथ धर्मकुल की खुशी कालुपुर मंदिर के पूज्य महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी श्री श्री पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के सुंदर मार्गदर्शन में श्री नरनारायणदेव देश के नियन्त्र में गोधावी गाँव में बहनो का भव्य मंदिर बहनो के गुरु प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के सीधी देखरेख में पूर्ण हुआ । ता. ११-१-२०२५ पौष सुद-१२-१३ से १३-१-२०२५ पौष सुद-१५ तक मूर्ति प्रतिष्ठा उल्लास पूर्वक पूर्ण की गई । इस अवसर पर श्रीमद् भागवत दश्म स्कंध त्रिदिवसीय पारायण स.गु. शा. स्वामी सत्यसंकल्पदासजी (महंतश्री नारायणघाट) के वक्तापद से पूर्ण की गयी । इस प्रसंग पर श्री विष्णुयज्ञ, पोथीयात्रा, नगरयात्रा, मूर्ति प्रतिष्ठा, अन्नकूट आदि कार्यक्रम पूर्ण हुआ । जिस में मुख्य यजमान परिवार लाभ उठाया था ।

ता. १३-१-२०२५ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा मूर्ति प्रतिष्ठा अच्छे से की गई । नूतन मंदिर में ठाकुरजी की अन्नकूट आरती प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्रीने उतारकर, बहनो की सभा को आशीर्वाद दिये थे । श्री नरनारायणदेव के प्रति निष्ठा बनी रहे । प.पू. आचार्य महाराजश्री भाईयो को आशीर्वाद दिये थे । धामो-धाम से संत आये थे । पूरे सभा का संचालन स.गु. शा. स्वा. नारायणमुनिदासजी (कोठारी कालुपुर मंदिर) और पार्षद महेन्द्र भगतने अच्छा कार्य किये थे । (कोठारीश्री गोधावी मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हर्षद कोलोनी पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से प.भ.गं.स्व. कहंबाबेन रामजीभाई साहुंगिया परिवार तरफ से ता. ३-१-०५ से ७-१-२५ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचान्ह पारायण सां. भारतीबा, गीदाबा, मीनाबा, मयुरीबा तथा रेखाबा के वक्तापद से हुई ।

कथा के अर्न्तगत आनेवाले प्रसंगो को उल्लासपूर्वक मनाया गया था । ता. ७-१-२५ को प्रातः प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री पधारी थी । उनेक करकमलो द्वारा शाकोत्सव का वघार करके अलौकिक शाकोत्सव मनाया गया । तथा बहनो को आशीर्वाद दी थी । इस अवसर पर विशेष धुन तथा सभा के अंत में महंत शा. स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी पधारकर भगवान की बात बताये थे । प.भ. दासभाई का मार्गदर्शन एवं प्रेरणा प्राप्त हुई ।(जी.वी. सीतापरा)

श्री सहजानंद गुरुकुल प्रार्थना मंदिर कोटेश्वर का ८ वाँ वार्षिक पाटोत्सव रात्रीय पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पूज्य स.गु. महंत स्वामी शास्त्री स्वामी श्री पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्रीहरि के चरणो से प्रसादीभूत नादि मुक्तराज श्री झँवेर भगत की वाडी कोटेश्वर निज मंदिर में ठाकुरजी का ८ वाँ वार्षिक पाटोत्सव ता. २२-१-२०२५ पोष वद-८ से ता. २६-१-२०२५ पौष वद-१२ तक उत्तलासपूर्वक मनाया गया । इस अवसर पर सम्प्रदाय के सुप्रसिद्ध कथाकार पूज्य स.गु. शा. स्वामी श्री रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) के वक्तापद से ग्यारह नियम की कथा का प्रबन्ध किया गया था । पाटोत्सव के यजमान श्रीहरि के प्रिय एक हरिभक्त परिवार था । सभा का सुदंर संचालन स.गु. शा. स्वा. नारायणमुनिदासजी (कोठारी कालुपुर मंदिर) और पार्षद महेन्द्र भगत ने किया

था। कोटेश्वर तथा आसपास के कथा प्रेमी कथा सुनकर धन्य हुए।(को. शा. स्वा. नारायणमुनिदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर उवारसद १३ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा अ.नि. स.गु. शास्त्री स्वामी हरिनारायणदासजी (मल्ल) की दिव्य प्रेरणा से जेतलपुरधाम के पूज्य महंत स.गु. शा. स्वामी श्री आत्मप्रकाशदासजी, पूज्य स.गु. शास्त्री स्वामी श्री पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के अच्छे मार्गदर्शन मे श्री स्वामिनारायण मंदिर उवारसद का १३ वाँ वार्षिक पाटोत्सव में ता. ३०-१-२०२५ से ३-२-२०२५ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचान्ह पारायण स.गु. शास्त्री स्वामी श्रीहरिप्रियदासजी गुरु स.गु. शा. स्वामी श्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर से-२३) के वक्तापद से उल्लास पूर्वक मनाया गया था । पाटोत्सव के यजमान अ.नि. कांतिभाई हरजीवनदास पारेख, अ.नि. मधुबेन कांतिभाी पारेख, प.भ. नरेन्द्रभाई, शाकोत्सव के यजमान अ.नि. मंजुलाबेन गोरधनभाई कचराभाई पटेल परिवार ने लाभ लिया था । धामोधाम से संत पधारे थे । संतो के हाथ से ठाकुरजी का अभिषेक अन्नकूट आरती और शाकोत्सव का अलौकिक वधार किया गया था।(कोठारीश्री उवारसद)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कुहा पाटोत्सव-शाकोत्सव कथा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा अ.नि.स.गु. शा. स्वा. हरिगोविंददासजी तथा अ.नि. शा. स्वा. माधवप्रसाददासजी की दिव्य प्रेरणा से तथा स.गु. शा. स्वा. गुरुप्रसाददासजी (कलोल) के मार्गदर्शन ये कुहा गाँव के सत्संग समाज के अच्छे प्रबन्द से ता. ३-१-२०२५ से ता. ५-१-२५ तक ठाकुरजी का वार्षिक पाटोत्सव, शाकोत्सव भव्यरुप से मनाया गया था।

इस अवसर के उपलक्ष्य पर स.गु. शा.स्वा. गोपालचरणदासजी (जमीयतपुरा) के वक्ता पद से श्री हनुमानजी के चरित्र कथा का सुंदर आयोजन किया गया था। जिस के यजमान अ.नि. ईश्वरभाई छबाभाई पटेल, अ.नि. चिमनभाई छबाभाई पटेल, अ.नि. चिमनभाई छबाभाई पटेल, अ.नि. कांतिभाई ईश्वरभाई पटेल, आदि परिवार हरिभक्तोने कथा वार्ता ठाकुरजी का अभिषेक, अन्नकूट, शाकोत्सव का लाभ लिये । शा. स्वा. उत्तमचरणदासजी (कलोल) ने अच्छेसे सभा का संचालन किये थे। शा. स्वा. आनंदप्रसाददासजी, श्री नरनारायणदेव युवक मंडल और कुहा गाँव के सभी हरिभक्त अच्छा प्रबन्ध किये थे । (महंत शा. स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी - कलोल-जमीयतपुरा)

मोयद (ता. प्रांतिज) श्री स्वामिनारायण मंदिर का ७ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा अ.नि. स.गु. भंडारी स्वामी श्री जानकीवल्लभदासजी के दिव्य आशीर्वाद से स.गु. महंत स्वामी श्री धर्मस्वरुपदासजी (नाथद्वारा) और स.गु. महंत स्वामी प्राणजीवनदासजी (प्रांतिज) के सुंदर मार्गदर्शन प्रेरणा से मोयद गाँव में ता. २१-१-२०२५ से ता. २३-१-२०२५ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन त्रिदिवसीय कथा स.गु. ब्र. शास्त्री स्वामी सरजुदासजी के वक्तापद से हुई थी। जिसके यजमान प.भ. राजुभाई माधाभाई पटेल, प.भ. मंजुलाबेन राजुभाई पटेल परिवार था।

आनंद स्वामी ने सभा का सुंदर संचालन किये थे। पूरे प्रबन्ध दिनेश भगत द्वारा किया गया था । (कोठारीश्री मोयद)

श्री स्वामिनारायण मंदिर आदिश्वरनगर नरोडा-शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर आदिश्वरनगर नरोडा में ता. ५-१-२०२५ को प्रातः श्री कडवा पाटीदार समाज की वाडी (दहेगाम रोड) में सभी हरिभक्त और अहमदाबाद मंदिर के पू. स्वामी बलदेवप्रसाददासजी और पू. स्वा. हरिजीवनदासजी की प्रेरणा एवम् मार्गदर्शन से भव्य शाकोत्सव मनाया गया ।(कोठारीश्री आदिश्वरनगर)

कासीन्द्रा गाँव में शाकोत्सव मनाना

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से जेतलपुरधाम के पूज्य महंत स.गु. शा. स्वामी श्री आत्मप्रकाशदासजी, पूज्य स.गु. शास्त्री स्वामी श्री पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से तथा अ.नि.

अंबालालभाई चतुरभाई पटेल, प.भ. सुरेशभाई अंबालालभी के यजमानपद से ता. ४-१-२०२५ शायं को सभी हरिभक्त मिलकर भव्य शाकोत्सव कासिन्द्रा श्री स्वामिनारायण मंदिर मे मनाया गया था । (कोठारीश्री कासिन्द्रा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच द्वारा पदयात्रा, २० घंटे की धुन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से बापूनगर एप्रोच मंदिर के महंत शा. स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी की प्रेरणा से यहाँ के निज मंदिर के द्विदशाब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में ता. २९-१२-२४ को एप्रोच मंदिर से कालुपुर मंदिर संत-हरिभक्तो के साथ पदयात्रा किये थे । इसमें कई हरिभक्त जुडे थे । प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री के आशीर्वाद से ता. ३०-१२-२४ के दिन १० घंटे और ८-१-२५ के दिन १० घंटे का महामंत्र धुन की गयी थी । इसमें कालुपुर मंदिर में सांख्ययोगी बहने पधार कर कथा वार्ता का लाभ दी थी । (गोरधनभाई सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुरधाम

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् प.पू. बड़े महाराजश्री तथा भविष्य के आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से और जेतलपुरधाम के पूज्य महंत स.गु. शा. स्वामी श्री आत्मप्रकाशदासजी, पूज्य स.गु. शास्त्री स्वामी श्री पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से और पू. स.गु. महंत स्वा. कृष्णप्रकाशदासजी के सुंदर मार्गदर्शन में श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुरधाम में विराजमान संकल्प पूर्ण करते महाप्रतापी श्री रेवतीजी बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज का द्विशताब्दी के उपलक्ष्य में श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण का अच्छी व्यवस्था की गयी थी । स.गु. महंत शा. स्वामी श्री भक्तिनंनदासजी (बावला) के वक्तापद से पू र्ण की गयी थी । जिस के यजमान प.भ. व्रिजेशकुमार शांतिलाल पटेल परिवार ने लाभ लिया था । जेतलपुरधाम प्रदेश के सभी गांवो के हरिभक्तोने कथा श्रवण का लाभ किये थे ।(शा. स्वा. जनमंगल स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बालासिनोर का शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से और जेतलपुरधाम के पूज्य महंत स.गु. शा. स्वामी श्री आत्मप्रकाशदासजी, पूज्य स.गु. शास्त्री स्वामी श्री पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से और पू. स.गु. महंत स्वा. कृष्णप्रकाशदासजी के अच्छे प्रबन्ध से श्री स्वामिनारायण मंदिर बालासिनोर में ता. ६-१-२०२५ के दिन भव्य शाकोत्सव मनाया गया था । इस अवसर पर पू. महंत स्वा. कृष्णप्रकाशदासजी (जेतलपुर), मकनसर, बीलिया आदि धामो से आकर संतो ने कथा वार्ता किये थे । शाकोत्सव का बघार किये थे । श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने शाकोत्सव की अद्भूत लीला का दर्शन कराये थे । बहनो द्वारा मंदिर में शाकोत्सव की अलौलिक रंगोली बनायी गयी थी । पूरे अवसर पर हरिभक्त अधिक संख्या में आकर लाभ लिये थे । (शा.स्वा. जनमंगलदास - जेतलपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर झूलासण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से और जेतलपुरधाम के पूज्य महंत स.गु. शा. स्वामी श्री आत्मप्रकाशदासजी, पूज्य स.गु. शास्त्री स्वामी श्री पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से झूलासण गाँव में भव्य शाकोत्सव मनाया गया था ।

इस अवसर पर जेतलपुरधाम से पू. पी.पी. स्वामी, ब्र. स्वा. कृष्णप्रियानंदजी, शा. स्वा. जनमंगलदासजी, नारणपुरा मंदिर, कलोल मंदिर आदि संत मंडल पधारकर कथा-वार्ता करके शाकोत्सव मनाया गया । गाँव के सभी हरिभक्तोने लाभ लिये थे । (शा. स्वा. जनमंगलदासजी - जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हाथपालिया शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से और जेतलपुरधाम के पूज्य महंत स.गु. शा. स्वामी श्री आत्मप्रकाशदासजी, पूज्य स.गु. शास्त्री स्वामी श्री पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से और पू. स.गु. महंत स्वा. कृष्णप्रकाशदासजी की सुंदर आयोजन से झाडी देश

के हाथपालिया गाँव में भव्य शाकोत्सव मनाया गया । इस अवसर पर जेतलपुरधाम से पू. पी.पी. स्वामी, ब्र. स्वा. कृष्णप्रियानंदजी पधारकर कथा-वार्ता का सुंदर लाभ दिये थे । जेतलपुरधाम के द्विशताब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में सारे हरिभक्तो को श्रीहरि के अनेक नियम स्वीकारने का अनुरोध किया गया था । गाँव के आस-पास के हरिभक्तो ने शाकोत्सव का लाभ लिये थे ।(शा.स्वा. जनमंगलदासजी - जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर भवनगरपुरा - कलोल मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री एवम् पूरे धर्मकुल के खुशी से तथा स.गु. शा. स्वामीश्री गुरुप्रसाददासजी, स.गु. शा. स्वा. श्री आनंदप्रकाशदासजी की प्रेरणा से तथा महंत शा .स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी (कलोल-जमीयतुपरा) के मार्ग दर्शन से श्री नरनारायणदेव देश के अर्न्तगत श्री स्वामिनारायण मंदिर भवानगरपुरा - कलोल मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव ता. २६-१-२०२५ से ता. ३०-१-२०२५ तक धाम-धूम से मनाया गया था ।

मूर्ति प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में स.गु. महंत शा. स्वा. उत्तमचरणदासजी (कलोल), स.गु. शा. स्वामी गोपालचरणदासजी (जमीयतपुरा) के वक्तापद से श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण की गयी थी ।

इस अवसर पर महोत्सव के मुख्य यजमानश्री प.भ. कांतिभाई कालीदास पटेल, विजुबेन कांतिलाल परिवार (अमेरिका) सोखडा कथा के मुख्य यजमानश्री प.भ. पटेल नारणभाई हरगोवनदास और प.भ. कमलाबेन नारणभाई पटेल परिवार (गोकुलडेरी कलोल) ने लाभ उठाया था ।

ता. २८-१-२०२५ के दिन प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे । सभी हरिभक्तो को आशीर्वाद दिये थे । ता. ३०-१-२०२५ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा नूतन मंदिर में ठाकुरजी की प्रतिष्ठा विधिवत रुप से पूर्ण की गयी । सभा में आये सभी हरिभक्तो को आशीर्वाद दिये थे ।(शा. यज्ञप्रकाशदासजी महंतश्री कलोल-जमीयतपुरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर टांकिया का शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा महंत शा. स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी (कलोल-जमीयतपुरा) की प्रेरणा से टांकिया गाँव में ता. १९-१२-२४ के दिन भव्य शाकोत्सव मनाया गया था ।

इस अवसर पर कालुपुर मंदिर के पूज्य महंत स्वामी स.गु. शा. स्वा. श्री पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी, स.गु. महंत शा. स्वामी उत्तमचरणदासजी (कलोल) आदि संत मंडल पधारकर कथा-वार्ता करके शाकोत्सव का वघार करके हरिभक्तो को खुश किये । शाकोत्सव के यजमान प.भ. शंकरसिंह भवानजी चौहान परिवार ने लाभ लिया था । (महेन्द्रसिंह चौहाण - कोठारीश्री)

बावला मंदिर में शाकोत्सव मनाना

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा जेतलपुरधाम के पूज्य महंत स.गु. शा. स्वामी श्री आत्मप्रकाशदासजी, पूज्य स.गु. शास्त्री स्वामी श्री पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से तथा बावला मंदिर के पू. महंत शास्त्री स्वामी भक्तिनंदनदासजी के सुंदर मार्गदर्शन से बावला मंदिर में भव्य शाकोत्सव मनाया गया था । जिस में बावला के सभी हरिभक्त शाकोत्सव का लाभ लेकर धन्य हुए ।(कोठारीश्री बावला मंदिर)

धमीज (देहगाम) मंदिर में शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा अ.नि. पू. भंडारी स्वामी जानकीवल्लबदासजी के दिव्य प्रेरणा से और पू. महंत स्वामी स.गु. स्वामी धर्मस्वरुपदासजी (नाथद्वारा-पोरडा) के अच्छे मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर धणीज में ता. २४-१-२५ के दिन अपने भविष्य के आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा भव्य शाकोत्सव किया गया था । इस अवसर पर धामोधाम से पू. महंतश्री और संत पधारे थे । गाँव के सभी हरिभक्तो को खुश होकर प.पू. लालजी महाराजश्री ने आशीर्वाद प्रदान किये थे । (पूरा सत्संग समाज-धमीज द्वारा श्री दिनेशभाई हितेशभाई)

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

कार्तिक सुद-१ प.भ.अ.नि. देवेन्द्रभाई अरविंदभाई (कलोल) । **कार्तिक सुद-२** प.भ. घनश्यामभाई परसोतमतभाई ठक्कर (अमहादाबाद), प.भ.अ.नि. प्रेमजीभाई जयरामभाई (वडताल), प.भ. बिपीनभाई शंकरलाल पटेल (राजपुर), प.भ. हिराबेन दशरथभाई पटेल (कलोल) । **कार्तिक सुद-३** प.भ. लक्ष्मणभाई प्रेमजीभाई टांक (सुरत), श्री नरनारायणदेव युवक मंडल (झुंडाल), प.भ. ध्येय जीतेनभाई जडिया (राजकोट), प.भ. प्रमोद गांडालाल चोक्सी (कोठा), प.भ. वीरध्वज महावीरसिंह वाघेला (खोडा), प.भ. हरेश सोरढिया (अहमदाबाद), प.भ. जयश्री देवेन्द्र दलाल (सुरत) । **कार्तिक सुद-४** प.भ. करसनभाई कुबेरदास पटेल (देउसणा) । **कार्तिक सुद-५** प.भ. बलदेवभाई कुबेरभाई (आनंदपुरवाले), प.भ. सविताबेन जयंतीलाल पटेल (नारदीपुर), प.भ. हितेशभाई रतिलाल पटेल (पोर-गांधीनगर), प.भ. प्रतीक एच. पटेल (अहमदाबाद), प.भ. नील हरि सहज (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. प्रेमजी रामजी खेताणी (कच्छ) । **कार्तिक सुद-६** प.भ.अ.नि. देवकीबेन केसराभाई पटेल (वलसाड), प.भ. निलेशभाई नटवरभाई प्रजापति (अहमदाबाद), प.भ. चिरायु प्रवीणभाई देवाणी (निकोल) । **कार्तिक सुद-७** प.भ. विनलबेन आशिषभाई चौधरी (माणेकपुर), प.भ. प्रवीणभाई हरिभाई मिस्त्री (बोटाद), प.भ. महेन्द्रभाई पटेल (देउसणवाले) । **कार्तिक सुद-८** प.भ.अ.नि. ठाकरसीभाई मूलजीभाई पटेल (अहमदाबाद) । **कार्तिक सुद-९** प.भ. विनुप्रसाद मोहनलाल पटेल (देहगाम), प.भ. भाविनभाई पटेल (निकोल), प.भ. सोमाभाई भूराभाई पटेल (रायणिया), प.भ. किशोरभाई उजमशीभाई ठक्कर (अहमदाबाद), प.भ. अमृताबेन विसनजी महेता (मुंबई) । **कार्तिक सुद-१०** प.भ. बाणी निरवकुमार चौधरी (माणेकपुर) । **कार्तिक सुद-११** प.भ.अ.नि. नारण कल्याण हिराणी (सुखपर-कच्छ) । **कार्तिक सुद-१२** श्री लक्ष्मीनारायणदेव द्विशताब्दी महोत्सव के अवसरपर (वडताल मंदिर), प.भ. भारतीबेन लालभाई सोनी (अहमदाबाद), प.भ. जयंतिभाई पलाभाई पटेल (नरोडा), प.भ. रुखीबेन अंबालाल पटेल (गवाडा), प.भ. अमिताबेन कांतिभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारणपर-कच्छ), प.भ. इवान ध्रुव पटेल (अहमदाबाद), प.भ. तेज स्टुडियो, प.भ. तर्पित (अहमदाबाद), प.भ. विक्रमराम खाखार (राजस्थान), सांख्ययोगी गीताबा-मीनाबा-मधुबा (हवेली-अहमदाबाद), प.भ. अर्जुन दीपककुमार सावलिया (अहमदाबाद) । **कार्तिक सुद-१३/१४** प.भ.अ.नि. मूलजी हीरजी वेकरिया (सुखपर-कच्छ), प.भ. लालभाई कुंवरजी हालाई (मेनार-कच्छ), प.भ.अ.नि. मोहनभाई कल्याण धामेलिया (सुरत), प.भ.अ.नि. प्रेमबाई केसरा हालाई (बलदिया-कच्छ), प.भ. दिलीपभाई ठक्कर (दियोदर), प.भ. डॉ. अमरशीभाई गोहेल (राजकोट) । **कार्तिक सुद-१५** प.भ.अ.नि. मगनभाई डुंगरभाई भोरणियार (जूना देवालिया), प.भ. वेदिका नयन कानाणी (अहमदाबाद), प.भ. आकाश वडोदरिया (अहमदाबाद), प.भ. चौधरी मणीलाल रामजीभाई (समौ), प.भ. अंकित अल्केशभाई भावसार (अहमदाबाद), प.भ. हार्दिकभाई पटेल (गांधीनगर) ।

कार्तिक वद-१ प.भ.अ.नि. वीखा रामजी हिराणी (सुखपर-कच्छ), प.भ. जयेशभाई प्रभुदासभाई पटेल (गोरज), प.भ.अ.नि. चिमनभाई ओधवजीभाई ठक्कर (बोपल) । **कार्तिक वद-२** प.भ. मुकेशभाई वीनुभाई पटेल (अंबापुर) । **कार्तिक वद-३** प.भ. ललिताबेन लालभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. अरविंदभाई के महेता (अहमदाबाद), प.भ. रमीलाबेन अमितभाई देसाई (निकोल) । **कार्तिक वद-४** प.भ. वालजी करशन हीराणी (बलदिया-कच्छ), प.भ. जिह्वीवेन दर्शितभाई, प.भ. ईन्द्रवदन और लीलाबेन (पालियाद), एच. के. ट्रावेल्स (अहमदाबाद) । **कार्तिक वद-५** प.भ. कृष्णकांत कांतिलाल पटेल (राणीप), प.भ. कनुभाई के. वेकरिया (अहमदाबाद) । **कार्तिक वद-६** प.भ.अ.नि. अशोकभाई वालजीभाई चोटलिया (हवेली), प.भ. सुधाबेन मनुभाई पटेल (बायड), प.भ. लालजी कानजी वेकरिया (बलदिया-कच्छ), स्वामी घनश्यामस्वरुपदासजी गुरु आनंद स्वामी (कालुपुर मंदिर), प.भ. लीलाबेन मोतीभाई जादव (मालणपुर) । **कार्तिक वद-७** प.भ. चेतनभाई भगाभाई (आनंदपुरा), प.भ. धगशकुमार हसमुखभाई पटेल (लवारपुर), प.भ.अ.नि. महेशभाई रामभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. ध्रुक्ति मुकेशभाई पटेल (वडु) । **कार्तिक वद-८** प.भ. केतन देवराज भोजाणी (बलदिया-कच्छ), प.भ. उमंग शैलेषभाई पटेल (मुंबई), प.भ. लक्ष्मणभाई विठ्ठलभाई पटेल (खंडेरावपुरा), प.भ.अ.नि. रावजीभाई अंबालाल पटेल (झुंडाल) । **कार्तिक वद-९** प.भ.अ.नि. गोविंदभाई चिमनभाई स्वामीनारायण (अहमदाबाद), अ.नि. स.गु. स्वामी हरिप्रियदाजी (सलगीवाडा), प.भ.अ.नि. जयाबेन रमणीकलाल (भुज-कच्छ) । **कार्तिक वद-१०** प.भ. श्रीनाथ राजेशभाई अमीन (अहमदाबाद), प.भ. रामभाई जोइतनदास पटेल (वेडा-कलोल), प.भ. जादवजी शिवजी मानबाई जादवजी वेकरिया (मिरजापर-कच्छ) । **कार्तिक वद-११** प.भ. धनजी रामजी वेकरिया (बलदिया-कच्छ) । **कार्तिक वद-१२** प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारणपर-कच्छ), हरिॐ परिवार प.भ. शैलेषभाई (सरसपुर) । **कार्तिक वद-१३** प.भ.अ.नि. प्रेमबाई रत्ना धानाणी (सुखपर-कच्छ), प.भ. क्रिष्णा अरविंदभाई पटेल (वडु), प.भ. दिलीपभाई नरेशकुमार ठक्कर (अहमदाबाद) । **कार्तिक वद-१४** प.भ.अ.नि. नटुभाई मोतीभाई पटेल (धमीज), प.भ. नवीनचंद्र गोविंदलाल पटेल (मोखासण), प.भ. स्मितल चौधरी (ह्युस्टन) । **कार्तिक वद-३०** प.भ. निर्विषा अरविंदभाई वेकरिया (मिरजापर-कच्छ), प.भ. समीरभाई नरेशभाई महेता (सोनगढ), प.भ. गोवाभाई सोमाभाई चौधरी (ईश्वरपुरा), प.भ. मनीषभाई जीतेन्द्रभाई चोकसी (अहमदाबाद), प.भ. लोकेशभाई सुतरिया (अहमदाबाद), प.भ. जलाबेन पूंजाभाई वानसर (अहमदाबाद), प.भ. देव रुपेशभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. आनंदीबेन विष्णुभाई पटेल (गुलाबपुरा), प.भ. राजेन्द्रभाई कानजीभाई पटेल (गवाडा), प.भ.अ.नि. मेघबाई शामजी हिराणी (गोधरा-कच्छ) ।

Printed and Published by **Shastri Swami Purushottamprakashdasji** on behalf of **Shree Swaminarayan Temple** and **Published From :** Shree Swaminarayan Mandir Kalupur, Ahmedabad-380001. Printed at **Asian Printery**, Near Talati Hall, Raipur, Ahmedabad-380001.
Editor : Shastri Swami Purushottamprakashdasji

अहमदाबाद शीलज मंदिर के शिलान्यास के अवसर पर शाकोत्सव के शाक का वघार करते प.पू. लालजी महाराजश्री ।

महीज गाँव में सभा को आशीर्वाद देते प.पू. लालजी महाराजश्री ।

धमीज गाँव में शाकोत्सव करते प.पू. लालजी महाराजश्री ।

टोरडा श्रीनरनारायणदेव युवक मंडल के स्नेह मिलन में आशीर्वाद देते प.पू. लालजी महाराजश्री ।

नारणपुरा मंदिर में शाकोत्सव करते प.पू. लालजी महाराजश्री ।

अहमदाबाद जी.एम.डी.सी. मैदान में हिन्दु आध्यात्मिक सेवा मेला में अपने कालुपुर मंदिर की झाँकी ।

चांदखेडा (अहमदाबाद) पारायण के अवसर पर प.पू. आचार्य महाराजश्री का पूजन करते हुए यजमान परिवार ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2024-2026
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2026

अहमदाबाद मंदिर में धनुर्मास के मध्य शाकोत्सव करते हुए प.पू. महाराजश्री तथा चौक में अनुशासित रुप में प्रसाद ग्रहण करते हरिभक्त।

अहमदाबाद मंदिर में अपने करकमलो द्वारा संत महादीक्षा सम्पन्न करते प.पू. महाराजश्री।

अहमदाबाद मंदिर में धनुर्मास की पूर्णाहुति प.पू. लालजी महाराजश्री के सांनिध्य में पूर्ण की गयी।

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से

शिक्षापत्री लेखने के २०० वर्षका

समैयो

23-1-2026 - 27-1-2026

अध्यक्ष :
प.पू. भावि आचार्यश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

श्री स्वामिनारायण मंदिर, अमदावाद

Praful Kharsani